International Journal of Information Movement *Vol. 8 Issue IV* *(August 2023)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages** **47-61**

सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित समाचारों एवं विभिन्न प्रकार के समाचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी गुणवत्ता पर बाजारीकरण के प्रभाव

(उत्तर भारत से प्रकाशित तीन हिंदी दैनिकों पर एक अध्ययन)

सरबजीत सिंह
पीएच.डी.शोधार्थी
गुरू जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौधोगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

और
प्रो.(डॉ.) मनोज दयाल
जनसंचार विभाग,
गुरू जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौधोगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

सारांश : प्रस्तुत शोध पत्र में यह जानने की कोशिश की गई है कि भारत में प्रकाशित होने वाले हिंदी दैनिक समाचार पत्र अपने मुख्य संस्करण में भारतीय समाज में व्याप्त समस्याओं से सम्बंधित समाचारों को अहमियत देते हैं या नहीं अगर देते हैं तो कितनी,कैसी तथा कहां अहमियत देते है।भारत में,जात–पात, गरीबी, अनपढ़ता,बेरोजगारी,धार्मिक विविधता,क्षेत्रवाद, महिला भेदभाव तथा कृषि क्षेत्र की दयनीय स्थिति आदि यहां की सामाजिक समस्याएं है। प्रस्तुत शोध पत्र में सामाजिक समस्या सम्बंधित समाचारों एवं विभिन्न प्रकार के समाचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं बाजारीकरण का उनकी गुणवत्ता पर प्रभाव को जानने का प्रयत्न किया गया है।इस वर्णानात्मक शोध में हिंदी दैनिक समाचार पत्रों (पंजाब केसरी,दैनिक जागरण तथा दैनिक भास्कर)के मुख्य संस्करणों का अवलोकन कर तथ्य एकत्रित किए गए हैं।सर्वेक्षण के माध्यम से हिंदी समाचार पत्रों के पाठकों,पत्रकारों,उप–संपादकों तथा संपादकों का साक्षात्कार कर आंकड़े एकत्रित कर तथ्यों को जानने का प्रयास किया गया है।इस शोध से प्राप्त परिणामों से यह तथ्य सामने आएं हैं कि भारत में हिंदी दैनिक पत्र अपने मुख्य संस्करण में सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों को कोई खास तव्जो नहीं देते यह समाचार बहुत कम संख्या तथा छोटे आकार में छापे जाते हैं जिससे उनकी गुणवता का ह्रास होता है, बाजारीकरण इन समाचारों पर हावी रहता है जिस कारण इनके आकार,संख्या तथा रंगीन चित्र आदि गुण प्रभावित होते हैं।भारतीय हिंदी समाचार पत्र समूह सामाजिक समास्या सम्बंधी समाचारों को विज्ञापन तथा राजनीतिक समाचारों के बाद प्रकाशित करना चाहते हैं।

1.0 प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तर भारत से प्रकाशित होने वाले हिंदी दैनिक समाचार पत्रों के मुख्य संस्करण में छपने वाले सामाजिक समस्या सम्बंधित समाचारों का अन्तर्वस्तु विश्लेषण कर इन समाचारों की संख्या,आकार,रंगीन छाया चित्र तथा अन्य विशेषताओं को जानने का प्रयत्न किया गया है।सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचार की गुणवत्ता पर बाजारीकरण(बाजार उन्मुखता) के प्रभावों को जानने की कोशिश की गई है।

1.1 सामाजिक समस्या सम्बंधित समाचार :– प्रत्येक देश की आर्थिक तथा भौगौलिक स्थिति तथा वहां के सामाजिक व्यवस्था ही वहां रहने वाले समाजों की समस्याओं को निर्धारित करती है इसलिए प्रत्येक देश की सामाजिक समस्याएं अलग–अलग होती हैं।भारत की विविधता ही भारत को महान बनाती है तो वहीं यह विविधता समाजों में टकराव तथा समास्या पैदा करती है जात–पात,गरीबी,अनपढ़ता,बेरोजगारी,धार्मिक विविधता,क्षेत्रवाद तथा कृषि क्षेत्र की दयनीय स्थिति आदि यहां की सामाजिक समस्याएं है। 'समाज के कुछ नियम निर्धारित होते हैं तथा बहुत से सामाजिक रिश्तों का ताना बाना होता जिनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति व्यवहार करता है और समाज चलता है जब कोई व्यक्ति या समुदाय इन नियमों के विपरीत गलत व्यवहार करता है तथा सामाजिक नियमों को तोड़ता है तो जो स्थिति उत्पन्न होती है उसे सामाजिक समस्या कहते हैं।समय अनुसार सामाजिक समस्याएं घटती तथा बढ़ती हैं मगर इन समस्याओं को बदलने में अत्यधिक समय लगता है। **द राइस एंड फाल आफ सोशल प्रोबलमस ,ए पब्लिक एरेनास माडल. (हिलगर्टनर एस.एंड सी. एस. बास्क) 1988** ।सामाजिक नियमों को तोड़ने वाले को आउटसाईडर कहा जाता है क्योंकि वह समाज में स्थापित नियमों को नहीं मानता। सामाजिक समस्या महिलाओं

से,बच्चों से,युवाओं से,वृद्धों से,जातपात से,सम्प्रदायिक्ता से,गरीबी से,भेदभाव से रंगभेद क्षेत्रवाद से सम्बंधित हो सकती है' **एच. एस. बेकर,आउटसाईडर,सीमनस एंड सचस्टर. (2008)।** अतः इन समस्याओं से सम्बंधित समाचार जो समाचार पत्रों में प्रकाशित होते हैं उन्हें सामाजिक समस्या सम्बंधित समाचार कहते हैं।

1.2 अन्तर्वस्तु विश्लेषण :– संचार की विषय वस्तु की वैज्ञानिक व्याख्या अंतर्वस्तु विश्लेषण कहलाता है'। हेराल्ड लास्वेल के सिद्धांत अनुसार किसने कहा,किसको कहा और क्या कहा के अन्तर्गतत अंतर्वस्तु विश्लेषण के अनुसान क्या का अर्थ संचार के संदेश से है अतः संदेश के विश्लेषण को ही अन्तर्वस्तु विश्लेषण कहते है। अन्तर्वस्तु विश्लेषण सिर्फ मीडिया की विषय वस्तु तक ही सीमित नहीं रहता वह कौन, श्रोत तथा किसको पाठक माध्यम तथा प्रभाव की भी व्याख्या करता है। यह वैज्ञानिक विधि है जिसके अन्तर्गत स्टीक, प्रमाणिक तथा तर्कसंगत नतीजे निकाले जोते हैं **अन्तर्वस्तु विश्लेषण (बी के कुठियाला)।** इस विधि से हम तीनों समाचार पत्रों के अलग–अलग परिणाम निकालने का प्रयत्न करेंगे। तीनों समाचार पत्रों के तीन–तीन परिणाम निकालकर नतीजों को सरल बनाने का प्रयास किया गया है।तीन प्रकार के नतीजों में कुल आंकड़े,औसत आंकड़े तथा प्रतिशत आंकड़े निकाले गए हैं।

1.3 बाजारीकण :–'ग्राहक आधारित और बाजार उन्मुख दोनों संतुलन के मामले हैं। बाजार उन्मुख व्यवसाय ग्राहकों की मौजुदगी,ग्राहकों की जरूरतों की उपेक्षा के लिए ग्राहकों की जरूरतों पर, बाजार उन्मुख होने की प्रकृति लाभ कमाने की समझ को दर्शाती है। अतः उत्पादक, ग्राहक तथा उत्पाद के मेल से बाजार बनता है।किसी क्षेत्र में इन कारकों को लागू करना उस क्षेत्र का बाजारीकरण (बाजार उन्मुखता) कहलाता है। समाचार पत्रों के बाजारीकरण में जो समाचार बिकता है वही छपता है वाली धारणा भी लागू होती है मगर. यह धारणा तब धरी की धरी रह जाती है जब समाचार पत्र समूह केवल और केवल अपने लाभ को ही देखते हैं तथा वह अपने ग्राहकों (पाठकों)की पसंद को विज्ञापनदाताओं के हाथों बेच देते है, इन सभी तथ्यों की प्रमाणिकता हो भी जांचने का मौका इस शोध पत्र में हमें मिलेगा।

2.0 साहित्य समीक्षा

अमीनु,ए.ए.(2015) ।रीलेशन बिटवीन एडवर्टाइजमैंटस एंड कवरेज ऑफ डेवलेपमैंट न्यूज बाय द न्यूजपेपरस डेली ट्रृष्ट एंड द नेशन (जनवरी 2012 – दिसंबर 2013) डाक्टरेट इन रिसर्च मैनेजमैंट ।
इस शोध कार्य में नाइजीरियाई समाचार पत्रों में विज्ञापनों और समाचार कवरेज के बीच संबंध की जांच की ।इस अनुसंधान में जोर दिया गया है कि नाइजीरियाई प्रेस में विज्ञापन कैसे विकास के मामलों के समाचार की कवरेज को प्रभावित करता है,यह समाचार पत्र में छपे समाचार के विकास की आवृत्ति को भी दर्शाता है।इसमें दो राष्ट्रीय स्वतंत्र समाचार पत्रों डेली ट्रृष्ट और द नेशन की 343 सामग्री संस्करणों की एक व्यवस्थित ढंग से विश्लेषण किया गया। निष्कर्ष से पता चला कि दो समाचार पत्र विकास के मामलों की कवरेज कम कर रहे हैं लेकिन डेली ट्रृष्ट समाचार पत्र की कवरेज द नेशन के मुकाबले उच्च आवृत्ति की है।गरीबी, बेरोजगारी और ग्रामीण विकास जैसे विकास के मुद्धों शिक्षा,स्वास्थ्य,पर्यावरण और कृषि के रूप में पर्याप्त कवरेज नहीं दी जाती। यह भी पाया गया कि दो पत्रों में विज्ञापन का विकास समाचार रिपोर्टों के साथ साकारात्मक संबंध है,जैसे ही विज्ञापनों में वृद्धि होती है विकास के मुद्धों की कवरेज भी बढ़ जाती है।
लिसचका, जे.ए.(2014).डिफरैंट रेवैन्यू इनसैंटिवस, डिफरैंट कान्टैंट? कम्पेयरिंग इकोनोमिक न्यूज बिफोर एंड डयूरिंग द फाइनैशियल कराइसिस इन जर्मन पब्लिक एंड कॉमर्सियल न्यूज आउटलेट ओवर टाईम.यूरोपियन जर्नल ऑफ कॉमनीकेशन,29(5),549–566.।
इस अध्ययन का तर्क है कि राजस्व मॉडल समाचार सामग्री के निर्धारण को प्रोत्साहित करता है। उनका लक्ष्य लाभ कमाना और दर्शकों की जरूरत को विज्ञापनदाताओं के हाथों बेचना है,समाचार–योग्य सामग्री के चयन और व्याख्या करने का परिणाम व्यावसायिक समाचार है। हम मात्रा,टोन और विषयों की बेतक्कलुफी की तुलना सभी आर्थिक समाचारों में शाम टी वी के लिए सार्वजनिक प्रसारकों,वाणिज्यिक प्रसारकों और टैबलाइड में करते हैं।परिणामों से संकेत मिलता है कि समाचार चयन राजस्व मॉडल द्वारा निर्देशित हैं तथा समाचार की मात्रा और विषय के आधार पर आर्थिक समाचार सार्वजनिक और वाणिज्यिक क्षेत्रों पर अलग–अलग है।समाचार व्याख्या और समाचार टोन मीडिया के प्रकार टी वी और प्रिंट में भिन्न भिन्न होती है। हम निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि विज्ञापन आय की निर्भरता और प्रतियोगी व्यवहार के अवलोकन से आपरेटिव पत्रकारिता प्रथाओं और निर्णय का स्थानांतरित करता है,जो पत्रकारिता परिणाम का निर्धारण करने के लिए जरूरी है।
बख्शी,एम. एंड मिश्रा,पी. (2016). स्ट्रक्चलर इकवेशन ऑफ मॉडलिंग ऑफ डिटर्मिनेंटस ऑफ कनजयूमर बेस ब्रांड इक्विटी ऑफ न्यूजपेपर. मीडिया बिजनेस स्टडीज जर्नल,13(2),73–94.।
मीडिया तेजी से बढ़ते प्रतिस्पर्धी बाजार में,ब्रांडिंग मीडिया कंपनियों के हाथ में एक शक्तिशाली उपकरण है।हालांकि अभ्यास

के दायरे में विकास ने महत्वपूर्ण जगह ले ली है,यहां मीडिया उद्योग में उपभोक्ता आधारित ब्रांड प्रदर्शन ड्राइवरों पर विरल अनुसंधान है। इस लेख का उद्धेश्य एसे चरों को विकसित करना है जो समाचार पत्रों में उपभोक्ता आधारित ब्रांडों की ग्राहक आधारित ब्रांड इक्विटी को प्रभावित करें।भारत में आकेर के सी बी बी ई सिद्धांत के आधार पर समाचार पत्रों के लिए ब्रांड इक्विडी मॉडल विकसित करने के लिए एक स्थानीय समाचार पत्र के उपभोक्ताओं का सर्वेक्षण किया गया था।सर्वेक्षण के माध्यम से डाटा एकत्र किए गए थे जिससे यह पता चला कि स्थानीयकरण,विचारधारा,विश्वसनीयता और मनोरंजन चर सी बी बी ई को प्रभावित कर रहे हैं।बाद में संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग से पता चला कि सभी चर ब्रांड इक्विटी पर साकारात्मक प्रभाव डालते हैं।समाचार पत्रों के बाजार के लिए यह अध्ययन विपणनकर्ताओं के लिए उन तत्वों की पहचान करता है जिनपर ब्रांड की इक्विटी जुटाने के लिए ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है। समाचार पत्रों के सी बी बी ई की भविष्यवाणी करने के लिए पहली बार एक मॉडल प्रस्तावित किया जा रहा है, जो एक मॉडल के रूप में आगे होने वाले अनसुंधानों में अन्य मीडिया उत्पादों के लिए आधार बन सके।

3.0 शोध उद्धेष्य

तीनों समाचार पत्रों के मुख्य संस्करण में प्रकाशित सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों एवं विभिन्न प्रकार के समाचारों की संख्या का तुलनात्मक अध्ययन करना ताकि यह ज्ञात हो सके कि किस प्रकार के समाचार ज्यादा मात्रा में प्रकाशित हो रहे हैं।

तीनों समाचार पत्रों के मुख्य संस्करण में प्रकाशित सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित समाचारों एवं विभिन्न प्रकार के समाचारों के आकार तुलनात्मक अध्ययन करना जिससे यह जाना जा सके कि किस प्रकार के समाचार को ज्यादा जगह दी जाती है।
तीनों समाचार पत्रों के मुख्य संस्करण में प्रकाशित सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित समाचारों के छाया चित्रों का अन्तर्वस्तु विश्लेषण करना।
तीनों हिंदी समाचार पत्रों के मुख्य संस्करण में प्रकाशित विभिन्न प्रकार के समाचारों के छाया चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन करना जिससे यह ज्ञात हो सके कि किन समाचारों के छाया चित्रों को प्रमुख्ता से छापा जाता है।
तीनों हिंदी समाचार पत्रों के मुख्य संस्करण में प्रकाशित विभिन्न प्रकार के समाचारों का उनकी अन्य विशेषताओं के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
तीनों हिंदी समाचार पत्रों के मुख्य संस्करण में प्रकाशित विभिन्न प्रकार के समाचारों का लीड एवं टॉप स्टोरी के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना जिससे यह ज्ञात हो सके कि किन समाचारों को लीड एवं टॉप स्टोरी में ज्यादा जगह दी जाती है। यह जानना कि क्या बाजारीकरण हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित समाचारों को प्रभावित करता है?
यह पता लगाना कि क्या हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों पर बाजारीकरण के प्रभाव के कारण सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित समाचारों के संकलन में पक्षपात होता है?
यह जानना कि क्या बाजारीकरण के कारण सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित समाचारों की संख्या में गिरावट आती है?
यह ज्ञात करना कि क्या बाजारीकरण के कारण सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित समाचारों के आकार में कमी आती है?
यह जानना कि क्या बाजारीकरण के कारण सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित समाचारों के चित्रों में कमी आती है?

4.0 शोध विधि एवं यंत्र

4.1 अलोकन विधि :– इस वर्णनात्मक शोध विधि में उत्तर भारत से छपने वाले तीन हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों के मुख्य संस्करण का अवलोकन कर सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित समाचारों का उनके प्रकार, संख्या,छाया चित्र,कॉलम आकार,पृष्ठ संख्या तथा अन्य गुणों अनुसार आंकड़ों को संकलित कर आंकड़ों का अन्तर्वस्तु विश्लेषण किया गया है।

4.2 तालिका :– तालिका गणनात्मक आंकड़ों के संकलन का सर्वव्यापक प्रमुख वैज्ञानिक यंत्र है इसलिए इस अध्ययन में तालिका को यंत्र के रुप में अपनाया गया ताकि तर्कसंगत आंकड़े एकत्रित किए जा सकें।तालिका में 12 कॉलम तथा 29 लाईनों को रखा गया है।जिसमें समाचारों के प्रकारों को उनकी संख्या,आकार, छाया चित्र,अन्य विशेषताएं तथा शीर्ष को लम्बवत तथा पृष्ठ संख्या,पृष्ठ 1 से पृष्ठ 10 तक को समानांतर रखा गया हैं।

4.3 सर्वेक्षण विधि :– इस शोध में सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित समाचारों पर बाजारीकरण के प्रभाव को जानने के लिए सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है जिसमें विभिन्न आयु वर्ग के पाठकों का प्रत्यक्ष वैयक्तिक साक्षात्कार कर आंकड़ों को संकलित किया गया। गणनात्मक शोध तकनीक के अंतर्गत उत्तर भारत के पांच राज्यों दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर के मुख्य शहरों के इन तीनों हिंदी दैनिकों के पाठकों की पहचान कर उनमें से 210 पाठकों को यादृच्छिक नमूना (Ramdom sample) के रुप में चयन कर आंकड़ों को संकलित किया गया, गुणात्मक तकनीक के अंतर्गत इन समाचार पत्रों के 50 पत्रकारों का जिनका समाचार संकलन में अहम योगदान होता है उनका प्रत्यक्ष वैयक्तिक

साक्षात्कार कर आंकड़ों को संकलित किया गया।इसके अलावा इन पांचों हिंदी दैनिकों के 10 उप–संपादकों तथा 5 संपादकों का प्रत्यक्ष वैयक्तिक साक्षात्कार कर आंकड़ों का संकलन किया गया है।

4.4 साक्षात्कार अनुसूचि :– इसके अंतर्गत साक्षात्कार अनुसूचि को एक यंत्र के रूप में प्रयोग किया गया जिसमें पाठकों के लिए 12 प्रश्नों, पत्रकारों के सर्वेक्षण के लिए 13 प्रश्नों, उप–संपादकों के लिए 14 प्रश्नों तथा संपादकों के लिए 14प्रश्नों प्रयोग किया गया जिनके उत्तर हां,नहीं तथा कभी–कभी को चुन कर सही का चिन्ह लगा कर देना था।इसके अलावा संपादकों के लिए अलग से 9 वैक्लपिक प्रश्नों का निर्माण किया गया।

5.0 तथ्य संकलन

5.1 अवलोकन विधि :– इस वर्णात्मक शोध में अवलोकन विधि को अपनाकर इस शोध कार्य में उत्तर भारत से प्रकाशित होने वाले तीन समाचार पत्रों पंजाब केसरी,दैनिक जागरण तथा दैनिक भास्कर का चुनाव किया गया।इसमें इन समाचार पत्रों के मुख्य संस्करणों में प्रकाशित समाचारों के आंकड़ों को संकलित किया गया।इसके लिए दो निरंतर सप्ताह 15–03–2021 से 28–03–2021(15,16,17,18,19,20,21,22,23,24,25,26,27,28) तक तथा दो निर्मित सप्ताह 2–04–21 से14–04–2021 (2,4,6,8,10,12,14) तक एवं 21–04–2021 से05–05–2021 (21,23,25,27,1,3,5) तक इन तीनों समाचार पत्रों के मुख्य संस्करणों की प्रतियों को एकत्रित करके आंकड़ों को संकलित किया गया है।

5.2 तालिका :– तालिका गणनात्मक आंकड़ों के संकलन का सर्वव्यापक प्रमुख वैज्ञानिक यंत्र है इसलिए इस अध्ययन में तालिका को यंत्र के रुप में अपनाया गया ताकि तर्कसंगत आंकड़े एकत्रित किए जा सकें।तालिका में 12 कॉलम तथा 29 लाईनों को रखा गया।पहले कॉलम में क्रम संख्या, 2रे कॉलम में समाचारों के प्रकार जिसे विषय वस्तु का नाम दिया गया, इसें बाद तीसरे कॉलम से लेकर 12वे कॉलम तक पृष्ठ संख्याओं को रखा गया कुल 10 पृष्ठों को रखा गया।अगर लाईनों को देखें तो पहली लाईन में शीर्षकों को रखा गया, 2री लाईन में पृष्ठ प्रकार, 3री लाईन में क्रम 1 में राजनीतिक समाचार की लीडिंग स्टोरी को रखा गया तो वहीं 4थी लाइन में राजनीतिक समाचारों की संख्या ,5वीं में रंगीन छाया चित्र,6ठी लाईन में छाया चित्र श्याम श्वेत, 7वीं लाईन में आकार, 8वी लाईन में बॉक्स व अन्य विशेषताओं को रखा गया, इसी प्रकार आर्थिक,सामाजिक समस्या सम्बंधित,अन्य समाचारों को 26वी लाईन तक क्रम 2,3,4 में रखा गया वहीं क्रम 5 में 27 वीं लाईन में विज्ञापन संख्या को रखा गया लाईन 28वी में विज्ञापन आकार को रखा गया तथा 29वी एवं अंतिम लाईन में कुल समाचारों को स्थान दिया गया ।

6.0 विश्लेषण एवं अवलोकन परिणाम

6.1 अन्तर्वस्तु विश्लेषण :– इस अध्ययन के द्वारा हम तीनों हिंदी दैनिक समाचार पत्रों पंजाब केसरी,दैनिक जागरण तथा दैनिक भास्कर की विषय वस्तु क्या क्या प्रकाशित किया गया के आंकड़े तालिका के माध्यम से एकत्रित करने के बाद अब हम इनका अन्तर्वस्तु विशलेषण करेंगे। तीनों समाचार पत्रों के तीन–तीन परिणाम निकालकर नतीजों को सरल बनाने का प्रयास किया गया है।तीन प्रकार के नजीजों में कुल आंकड़े,औसत आंकड़े तथा प्रतिशत आंकड़े निकाले गए हैं।

6.2 कुल समाचार आंकड़े :– प्रत्येक हिंदी दैनिक समाचार पत्र के मुख्य संस्करण की 28–28 प्रतियों के आंकड़े संकलित करने के पश्चात तालिका के सभी वर्गों की संख्याओ को जोड़ कर समाचारों की कुल संख्या,रंगीन छाया,श्याम श्वेत छाया चित्र आकार,बाक्स तथा अन्य विशेषताओं तथा लीडिंग तथा टॉप स्टोरी के आंकड़े सामने आए।

जैसे हिंदी दैनिक पंजाब केसरी ने 28 प्रतियों में अपने पहले पृष्ठ पर **1,4,2,3,6,5,1,1,5,1,1,2,3,2,3,4,2,1,2,4,2,3,0,5,2,3,5** राजनीतिक समाचारों का प्रकाशन किया

कुल = 72 राजनीतिक समाचारों का प्रकाशन किया।

6.3 माध्य (औसत) :– तालिका में संकलित आंकड़ों में हर समाचार पत्र के प्रत्येक पृष्ठ के 28 आंकड़े सामने आए जिनको जोड़ कर तथा माध्य (Mean) का सूत्र लगा कर प्रत्येक पृष्ठ का एक औसत आंकड़ा निकाला गया।

माध्य = ∑x/N
∑x = सभी संकलित आंकड़ों का योग
N = संकलित आंकड़ों की संख्या

पंजाब केसरी की 28 प्रतियों के पृष्ठ 1 पर राजनीतिक समाचारों की संख्या के जो आंकड़े सामने आए वो इस प्रकार हैं

(1,4,2,3,6,5,1,1,5,1,1,2,3,2,3,4,2,1,2,4,2,3,0,5,2,3,5)

इसलिए ∑x = 72 N = 28

माध्य = ∑x/N

माध्य = 72 / 28 = 2.57

इससे यह ज्ञात होता है कि पंजाब केसरी समाचार पत्र ने अपने मुख्य संस्करण के पहले पृष्ठ पर औसत **2.57** राजनीतिक समाचार छापे ।

6.4 प्रतिशत :– इसके बाद हमने इन परिणामों को ओर सरल बनाने के लिए सभी प्रकार के समाचारों का प्रतिशत भी निकाला जिसमें सभी प्रकार के समाचारों की संख्या को जोड़ कर कुल समाचार निकाले तथा एक एक करके सभी प्रकार के समाचारों की संख्या को 100 से गुणा करके कुल समाचारों से भाग कर दिया गया।

जैसे कि पंजाब केसरी के पहले पृष्ठ पर राजनीतिक समाचारो की संख्या का औसत 2.57 है तथा पहले पृष्ठ के कुल समाचारों की संख्यां 12.57 है

इसलिए = 2.57*100 ÷12.57

प्रतिशत = 20.45

अतः यह तथ्य निकलकर आया कि पंजाब केसरी ने अपने पहले पृष्ठ पर 20.45 प्रतिशत राजनीतिक समाचारों का प्रकाशन किया।

तीनों हिंदी दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचार संख्या के कुल आंकड़े

तालिका नं. 1 हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों की कुल संख्या।

समाचारों के प्रकार	पंजाब केसरी	दैनिक जागरण	दैनिक भास्कर
कुल संख्या	3503	3423	3123
राजनीतिक समाचार	704	480	365
आर्थिक समाचार	487	361	442
स.स.स. समाचार	531	579	499
अन्य समाचार	1381	1189	1335
विज्ञापन	400	814	482

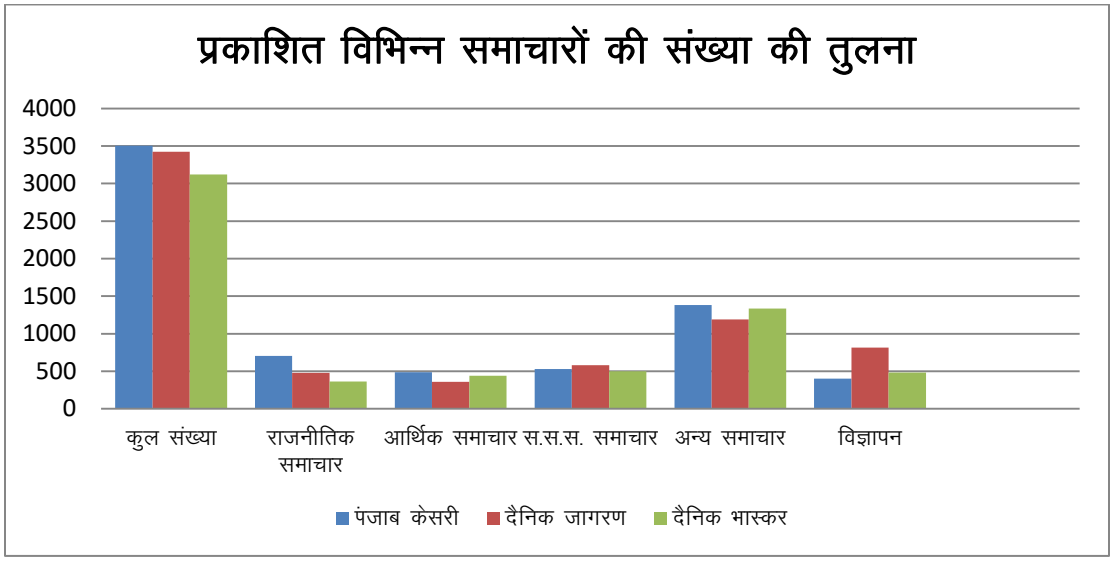

आरेख नं. 1 हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित .समाचारों की संख्या।

तीनों समाचार पत्रों के अवलोकन से संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से जो आंकड़े सामने आए उससे हम यह जान पाए कि इन 28 दिनों में पंजाब केसरी ने कुल 3503 समाचारों का प्रकाशन किया जिसमें सबसे ज्यादा 1381अन्य समाचारों का प्रकाशन किया तथा दूसरे स्थान पर 704 राजनीतिक समाचार प्रकाशित हुए, तीसरे स्थान पर 531 सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचार छापे,487 की मात्रा में आर्थिक समाचार छापे तथा सबसे कम 400 की संख्या में समाचार प्रकाशित किए गए। दैनिक जागरण ने कुल 3423 समाचार प्रकाशित किए जिसमें सबसे ज्यादा 1189 अन्य समाचार प्रकाशित किए तो वहीं 819 की संख्या में विज्ञापन प्रकाशित हुए,579 की संख्या में सा.स.स.समाचार प्रकाशित किए गए, 480 की संख्या के साथ राजनीतिक समाचार प्रकाशित किए गए,सबसे कम 361की संख्या में आर्थिक समाचार दैनिक जागरण में प्रकाशित किए गए।दैनिक भास्कर ने कुल 3123 समाचार प्रकाशित किए जिसमं सबसे ज्यादा 1335 की संख्या में अनय समाचार छापे गए तो वहीं 499 की संख्या में दूसरे स्थान पर सा.स.स. समाचार प्रकाशित हुए,तीसरे स्थान पर 482 की संख्या के साथ विज्ञापन प्रकाशित किए गए,चौथे स्थान पर 442 की संख्या में आर्थिक समाचार प्रकाशित किए गए तो वहीं सबसे कम 365 की संख्या में राजनीतिक समाचार प्रकाशित किए गए।इन आंकड़ों से यह तथ्य सामने आया कि दैनिक जागरण ने इन दिनों में दोनों अखबारों से ज्यादा सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों का प्रकाशन किया तो वहीं पंजाब केसरी ने सबसे कम सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचार प्रकाशित किए।मगर इन समाचारों का कुल प्रतिशत बहुत कम यह संख्या में तीसरे स्थान पर है।

आकार के औसत आंकड़े

तालिका नं. 2 हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों का आकार ।

समाचारों के प्रकार	पंजाब केसरी	दैनिक जागरण	दैनिक भास्कर
कुल आकार	15900	15900	15900
राजनीतिक समाचार	3182	2465	1688
आर्थिक समाचार	1586	1400	1979
स.स.स. समाचार	1906	2023	2025
अन्य समाचार	6223	5039	6053
विज्ञापन	3048	5052	4325

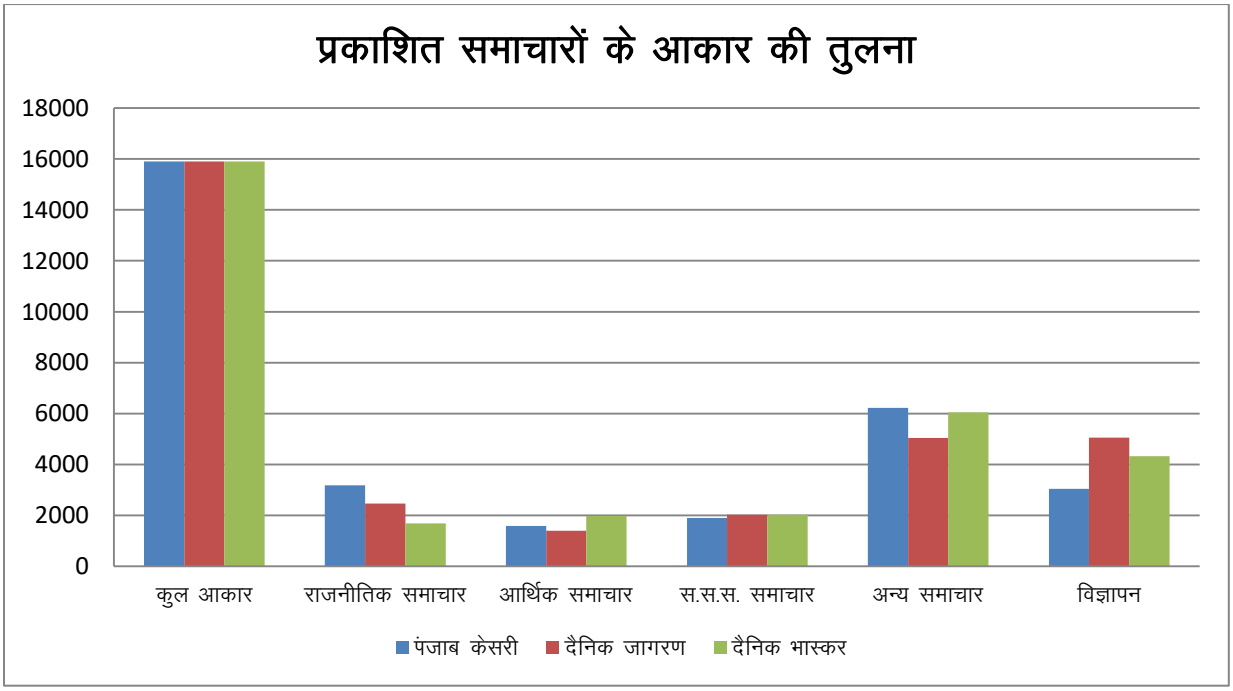

आरेख नं. 2 हिंदी दैनिकों में प्रकाशित समाचारों का आकार ।

तीनों समाचार पत्रों के अवलोकन से संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से जो आकार के औसत आंकड़े सामने आए उससे हम यह जान पाए कि इन 28 दिनों में पंजाब केसरी ने अपने औसत 15900 वर्ग सैंटीमीटर कुल क्षेत्रफल में से सबसे ज्यादा औसत 6223 वर्ग सैंटीमीटर पर अन्य समाचारों का प्रकाशन किया,इसके बाद 3182 वर्ग सैंटीमीटर पर राजनीतिक समाचार प्रकाशित हुए हैं,तीसरे स्थान पर 3048 वर्ग सैंटीमीटर पर विज्ञापन प्रकाशित किए गए,चौथे स्थान पर 1905 वर्ग सैंटीमीटर पर सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों का प्रकाशन किया तथा सबसे कम 1586 वर्ग सैंटीमीटर पर आर्थिक समाचारों का प्रकाशन किया गया है । दैनिक जागरण ने अपने औसत 15900 वर्ग सेंटीमीटर कुल क्षेत्रफल में से सबसे ज्याइा 5052 वर्ग सैंटीमीटर पर विज्ञापन प्रकाशित किए गए तथा दूसरे स्थान के साथ 5039 वर्ग सैंटीमीटर पर अन्य समाचारों का प्रकाशन किया गया,राजनीतिक समाचार को तीसरा स्थान मिला जिनकों 2465 वर्ग सैंटीमीटर जगह दी गई, चौथे स्थान पर आर्थिक समाचार रहे जिन्हें 2465 वर्ग सैंटीमीटर जगह मिली तो वहीं सबसे कम औसत 2023 वर्ग सैंटीमीटर पर सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों का प्रकाशन किया गया।दैनिक भास्कर ने अपने औसत 15900 वर्ग सैंटीमीटर क्षेत्रफल में से औसत 6053 वर्ग सैंटीमीटर पर अन्य समाचारों का प्रकाशन किया गया जो आकार पानें में पहले स्थान पर रहे,दूसरे स्थान पर औसत 4325 वर्ग सैंटीमीटर पर विज्ञापनों का प्रकाशन हुआ,तीसरे स्थान पर 2024 वर्ग सैंटीमीटर पर सामाजिक समस्याया संबंधी समाचार प्रकाशित हुए,चौथे स्थान पर 1989 वर्ग सैंटीमीटर के साथ आर्थिक समाचारों का प्रकाशन किया गया,सबसे कम 1688 वर्ग सैंटीमीटर पर राजनीतिक समाचारों का प्रकाशन किया गया।इन आंकड़ों से जो तथ्य सामने आए उससे यह ज्ञात होता है कि दैनिक भास्कर ने इन दोनों दैनिकों से ज्यादा जगह सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों को दी।मगर यह अपने कुल क्षेत्रफल के प्रतिशत में बहुत कम है यह इन समाचारों के प्रकाशित आकार में तीसरे स्थान पर है।

रंगीन छाया चित्रों के कुल आंकड़े

तालिका नं. 3 हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों के रंगीन छाया चित्र संख्या /

समाचारों के प्रकार	पंजाब केसरी	दैनिक जागरण	दैनिक भास्कर
कुल रंगीन चित्र	2698	1174	1358
राजनीतिक समाचार	609	291	190
आर्थिक समाचार	224	113	205
स.स.स. समाचार	347	164	221
अन्य समाचार	1518	606	742

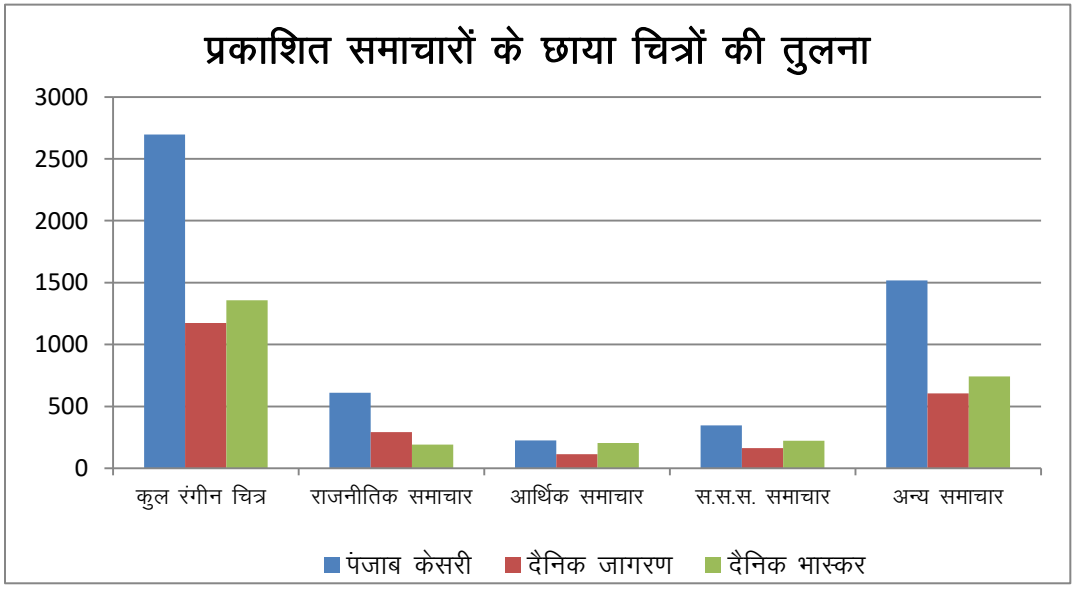

आरेख नं. 3 हिंदी दैनिकों में प्रकाशित समाचारों के रंगीन छाया चित्रों की संख्या ।

तीनों समाचार पत्रों के अवलोकन से संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से रंगीन चित्रों के प्रकाशन के कुल आंकड़े सामने आए उससे हम यह जान पाए कि इन 28 दिनों में पंजाब केसरी ने कुल 2698 रंगीन छाया चित्रों का प्रकाशन किया जिसमें सबसे ज्यादा अन्य समाचारों के रंगीन छाया चित्र प्रकाशित किए गए,दूसरे स्थान पर राजनीतिक समाचारों के कुल 609 छाया चित्रों का प्रकाशन किया गया।तीसरे स्थान पर 347 सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों के रंगीन चित्रों का प्रकाशन किया गया,सगसे कम 224 आर्थिक समाचारों के रंगीन छाया चित्रों का प्रकाशन पंजाब केसरी ने किया।दैनिक जागरण ने कुल 1174 रंगीन छाया चित्रों का प्रकाशन इन दिनों में किया जिसमें सबसे ज्यादा 608 अन्य समाचारों के रंगीन चित्रों का प्रकाशन हुआ,दूसरे स्थान पर राजनीतिक समाचारों के 291 रंगीन चित्रों का प्रकाशन हुआ,तीसरे स्थान पर सा.स.स.समाचारों के 164 रंगीन छाया चित्रों का प्रकाशन किया गया सबसे कम आर्थिक समाचारों के 113 रंगीन छाया चित्रों का प्रकाशन दैनिक जागरण ने किया। दैनिक भास्कर ने इन दिनों कुल 1358 रंगीन छाया चित्रों का प्रकाशन किया जिसमें सबसे ज्यादा अन्य समाचारों के 742 रंगीन छाया चित्रों का प्रकाशन किया गया दूसरे स्थान पर सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों के 221 रंगीन छाया चित्रों का प्रकाशन कियो,तीसरे स्थान पर आर्थिक समाचारों के 205 रंगीन छाया चित्रों का प्रकाशन किया गया ,सबसे कम दैनिक भास्कर ने राजनीतिक समाचाारों के 190 रंगीन छाया चित्रों का प्रकाशन किया गया ।

अन्य विशेषताओं के कुल आंकड़े

विभिन्न समाचार	पंजाब केसरी	दैनिक जागरण	दैनिक भास्कर
कुल विशेषताएं	1651	1295	1370
राजनीतिक समाचार	451	306	235
आर्थिक समाचार	257	177	196
स.स.स. समाचार	178	211	208
अन्य समाचार	765	601	731

तालिका नं. 4 हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों की विशेषताओं की संख्या।

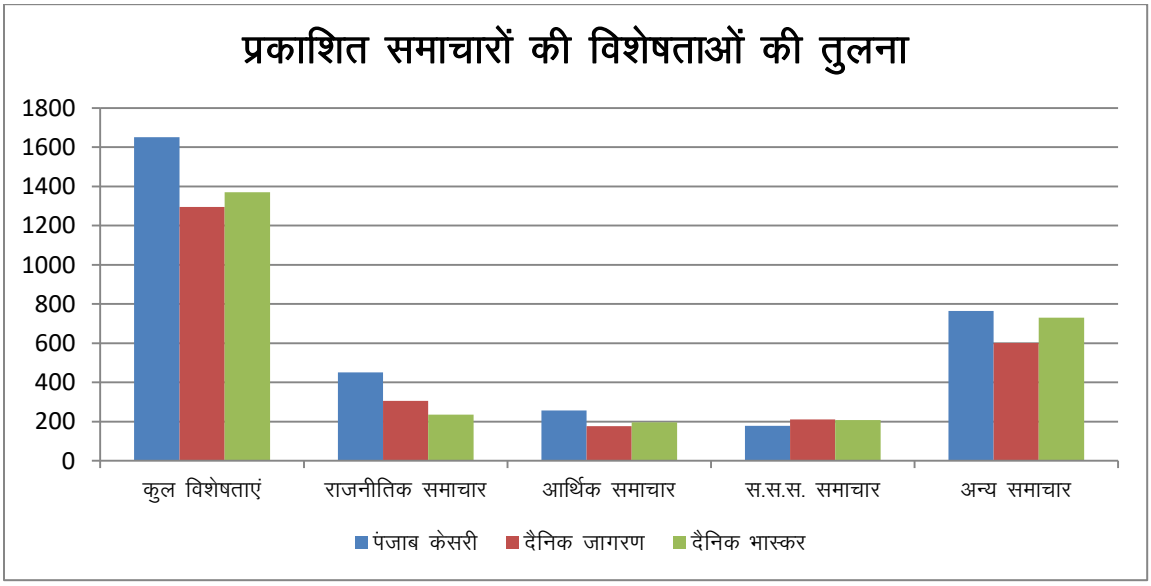

आरेख नं. 4 हिंदी दैनिकों में प्रकाशित समाचारों की विशेषताओं की संख्या ।

तीनों समाचार पत्रों के अवलोकन एवं संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से समाचारों की विशेषताओं के प्रकाशन के कुल आंकड़े सामने आए उससे हम यह जान पाए कि इन 28 दिनों में पंजाब केसरी ने कुल 1651 बाक्स व अन्य विशेषताओं का प्रकाशन किया जिसमें सबसे ज्यादा अन्य समाचारों के 765 बाक्स व अन्य विशेषताएं प्रकाशित किए गए,दूसरे स्थान पर राजनीतिक समाचारों के कुल 451 बाक्स एवं विशेषताओं का प्रकाशन किया गया,तीसरे स्थान पर 257 आर्थिक समाचारों के बाक्स एवं

अन्य समाचारों का प्रकाशन किया गया,सबसे कम 178 सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों के बाक्स एवं अन्य विशेषताओं का प्रकाशन पंजाब केसरी ने कियाा।दैनिक जागरण ने कुल 1295 बाक्स एवं अन्य विशेषताओं का प्रकाशन इन दिनों में किया जिसमें सबसे ज्यादा 601 अन्य समाचारों के बाक्स एवं अन्य विशेषताओं का प्रकाशन हुआ,दूसरे स्थान पर राजनीतिक समाचारों के 306 बाक्स एवं अन्य विशेषताओं का प्रकाशन हुआ,तीसरे स्थान पर सा.स.स.समाचारों के 211 बाक्स एवं अन्य विशेषताओं का प्रकाशन किया गया सबसे कम आर्थिक समाचारों के 177 बाक्स एवं अन्य विशेषताओं का प्रकाशन दैनिक जागरण ने किया। दैनिक भास्कर ने इन दिनों कुल 1370 बाक्स एवं अन्य विशेषताओं का प्रकाशन किया जिसमें सबसे ज्यादा अन्य समाचारों के 731 बाक्स एवं अन्य विशेषताओं का प्रकाशन किया गया दूसरे स्थान पर राजनीतिक समाचारों के 235 बाक्स एवं अन्य विशेषताओं का प्रकाशन किया,तीसरे स्थान पर सा.स.स. समाचारों के 208 बाक्स एवं अन्य विशेषताओं का प्रकाशन किया गया ,सबसे कम दैनिक भास्कर ने आर्थिक समाचाारों के 168 बाक्स एवं अन्य विशेषताओं का प्रकाशन किया गया ।

लीड स्टोरी के कुल आंकड़े

तालिका नं. 5 हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों की लीड स्टोरी की संख्या ।

समाचारों के प्रकार	पंजाब केसरी	दैनिक जागरण	दैनिक भास्कर
कुल लीड स्टोरी	28	28	28
राजनीतिक समाचार	15	11	7
आर्थिक समाचार	0	0	2
स.स.स. समाचार	1	3	2
अन्य समाचार	12	12	17

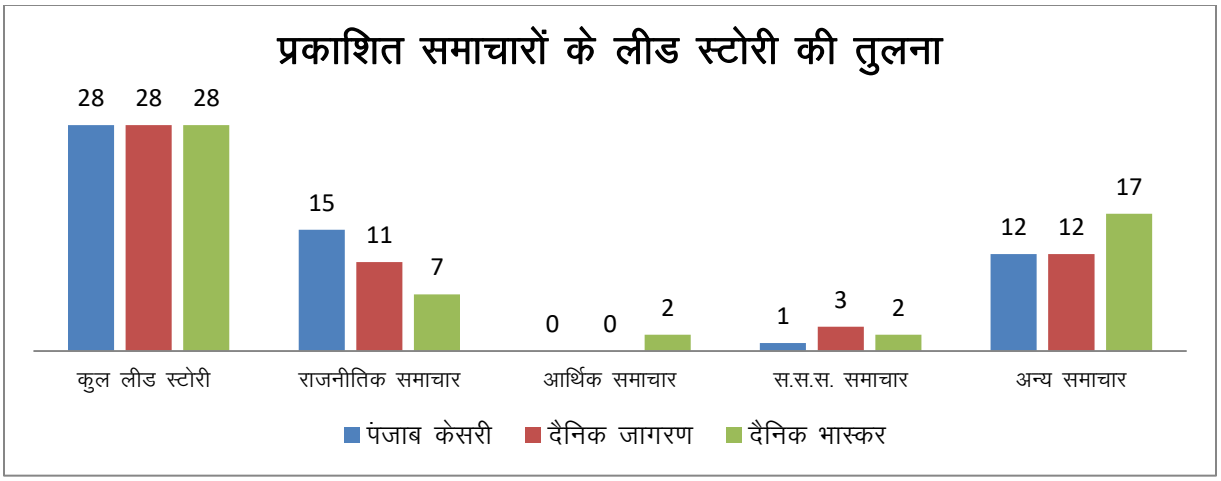

आरेख नं. 5 हिंदी दैनिकों में प्रकाशित समाचारों की लीड स्टोरी की संख्या ।

तीनों समाचार पत्रों के अवलोकन एवं संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से समाचारों को लीड स्टोरी के रूप में प्रकाशन के कुल आंकड़े सामने आए उससे हमें यह ज्ञात हुआ कि इन 28 दिनों में पंजाब केसरी ने कुल 28 लीड स्टोरी में से सबसे ज्यादा 15 बार राजनीतिक समाचारों को लीड स्टोरी के रूप में छापा तो वही अन्य समाचारों 12 बार लीड स्टोरी में जगह मिली,एक बार सा.स.स.समाचारों को लीड स्टोरी में जगह दी गई तो वहीं आर्थिक समाचारों को एक बार भी लीड स्टोरी में जगह नहीं मिल पाई।अगर दैनिक जागरण को देखें तो अपने कुल 28 लीड स्टोरी प्रकाशित की जिसमें सबसे ज्यादा 12 बार अन्य समाचारों को लीड स्टोरी में जगह दी गई,राजनीतिक समाचारों को 11 बार लीड स्टोरी में रखा गया,सा.स.स. समाचारों को 2 बार लीड स्टोरी में जगह दी गई तथा आर्थिक समाचारों को लीड स्टोरी में जगह नहीं मिल पाई। दैनिक भास्कर ने अपने कुल 28 लीड स्टोरी मे सबसे ज्यादा 17 बार अन्य समाचारों को लीड स्टोरी में जगह दी गई , राजनीतिक समाचारों को 7 बार लीड स्टोरी में जगह दी गई तो वहीं सा.स.स. समाचारों एवं आर्थिक समाचारों को 2–2 बार लीड स्टोरी में जगह दी गई ।

टॅाप स्टोरी के कुल आंकड़े

तालिका नं. 6 हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों की टॅाप स्टोरी की संख्या ।

समाचारों के प्रकार	पंजाब केसरी	दैनिक जागरण	दैनिक भास्कर
कुल टॅाप स्टोरी	252	252	252
राजनीतिक समाचार	74	64	50
आर्थिक समाचार	37	49	34
स.स.स. समाचार	30	39	46
अन्य समाचार	111	100	122

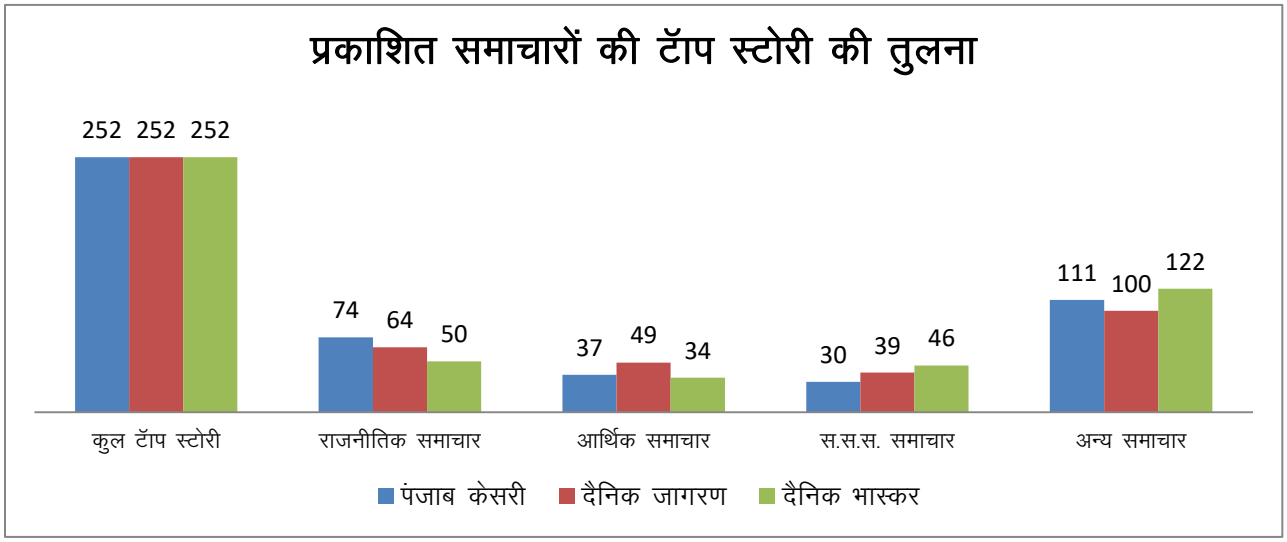

आरेख नं. 6 हिंदी दैनिकों में प्रकाशित समाचारों की टॅाप स्टोरी की संख्या ।

तीनों समाचार पत्रों के अवलोकन एवं संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से समाचारों को टॅाप स्टोरी के रूप में प्रकाशन के कुल आंकड़े सामने आए उससे हमें यह ज्ञात हुआ कि इन 28 दिनों में पंजाब केसरी ने कुल 252 टॅाप स्टोरी में से सबसे ज्यादा 111 बार अन्य समाचारों को टॅाप स्टोरी के रूप में छापा तो वही राजनीतिक समाचारों को 74 बार टॅाप स्टोरी में जगह मिली, 37 बार आर्थिक.समाचारों को टॅाप स्टोरी में जगह दी गई तो वहीं सा.स.स. समाचारों को 30 बार भी टॅाप स्टोरी में जगह मिल पाई।अगर दैनिक जागरण को देखें तो अपने कुल 252 टॅाप स्टोरी प्रकाशित की जिसमें सबसे ज्यादा 100 बार अन्य समाचारों को टॅाप स्टोरी में जगह दी गई,राजनीतिक समाचारों को 64 बार टॅाप स्टोरी में रखा गया,आर्थिक समाचारों को 49 बार टॅाप स्टोरी में जगह दी गई तथा सा.स.स. समाचारों को टॅाप स्टोरी में जगह मिल पाई। दैनिक भास्कर ने अपने कुल 252 टॅाप स्टोरी मे सबसे ज्यादा 122 बार अन्य समाचारों को टॅाप स्टोरी में जगह दी गई , राजनीतिक समाचारों को 50 बार टॅाप स्टोरी में जगह दी गई तो वहीं सा.स.स. समाचारों को 46 बार टॅाप स्टोरी में जगह दी गई एवं आर्थिक समाचारों को 34 बार लीड स्टोरी में जगह दी गई ।

7.0 सर्वेक्षण परिणाम

इस अध्ययन को अधिक सार्थक बनाने के लिए सर्वेक्षण को अंजाम दिया गया जिसमें विभिन्न साक्षात्कार किए गए।इन साक्षात्कारों से प्राप्त तथ्यों से इस अध्ययन में अवलोकन से प्राप्त आंकड़ों को प्रमाणित कर दिया इन साक्षात्कारों से जो तथ्य सामने आए वो इस प्रकार है।

7.1 पाठक साक्षात्कार

साक्षात्कार अनुसूचि 1:– तीन हिंदी समाचार पत्रों पंजाब केसरी,दैनिक जागरण तथा दैनिक भास्कर के 210 पाठकों के साक्षात्कार से एकत्रित आंकड़ों के परिणाम इस प्रकार हैं।

तालिका नं. 7 हिंदी दैनिकों के पाठको द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों का कुल तथा प्रतिशत सर्वेक्षण परिणाम

प्रश्न	हां		नहीं		कभी– कभी	
	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
1	147	70	5	2	58	28
2	3	2	181	86	26	12
3	142	68	3	1	65	31
4	2	1	170	81	38	18
5	138	66	4	2	68	32
7	27	13	95	45	88	42
8	12	6	111	53	87	41

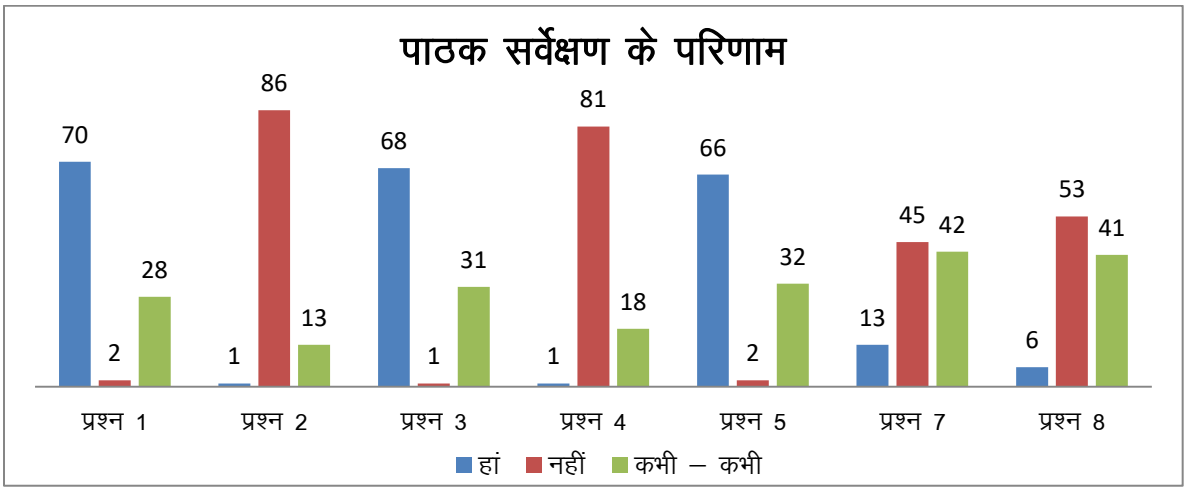

आरेख नं. 7 हिंदी दैनिकों के पाठको द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों का प्रतिशत सर्वेक्षण परिणाम

इस सर्वेक्षण परिणाम में 210 पाठकों में से 70 प्रतिशत पाठकों ने माना कि बाजारीकरण सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारा की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।इसके अलावा 86 प्रतिशत पाठकों का कहना था कि बाजारीकरण के कारण सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों की संख्या कम हो जाती है।66 प्रतिशत पाठक यह मानते हैं कि बाजारीकरण के कारण सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों का आकार छोटा हो जाता है। 45प्रतिशत पाठकों का मानना था कि सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों में रंगीन छाया चित्र नहीं छापे जातें तो वहीं 41 प्रतिशत पाठकों ने कहा कभी–कभी छापे जाते हैं।

7.2 पत्रकार साक्षात्कार

तालिका नं. 8 हिंदी दैनिकों के पत्रकारों द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों का कुल तथा प्रतिशत सर्वेक्षण परिणाम

प्रश्न	हां		नहीं		कभी– कभी	
	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
1	49	98	0	0	1	2
2	8	16	24	48	18	36

3	48	96	1	2	1	2
4	29	58	9	18	12	24
5	27	54	8	16	15	30
7	15	30	18	36	17	34
8	1	2	48	96	1	2
13	32	64	6	12	12	24

साक्षात्कार अनुसूचि 2 :– हमने उत्तर भारत के पांच समाचार पत्रों के 50 पत्रकारों को इस सर्वेक्षण में शामिल किया है जिसमें पंजाब केसरी,दैनिक जागरण,दैनिक भास्कर,अमर उजाला तथा दैनिक ट्रिब्यून को लिया है। पांचों हिंदी समाचार पत्रों के पत्रकारों से एकत्रित आंकड़ों के परिणाम इस प्रकार हैं।

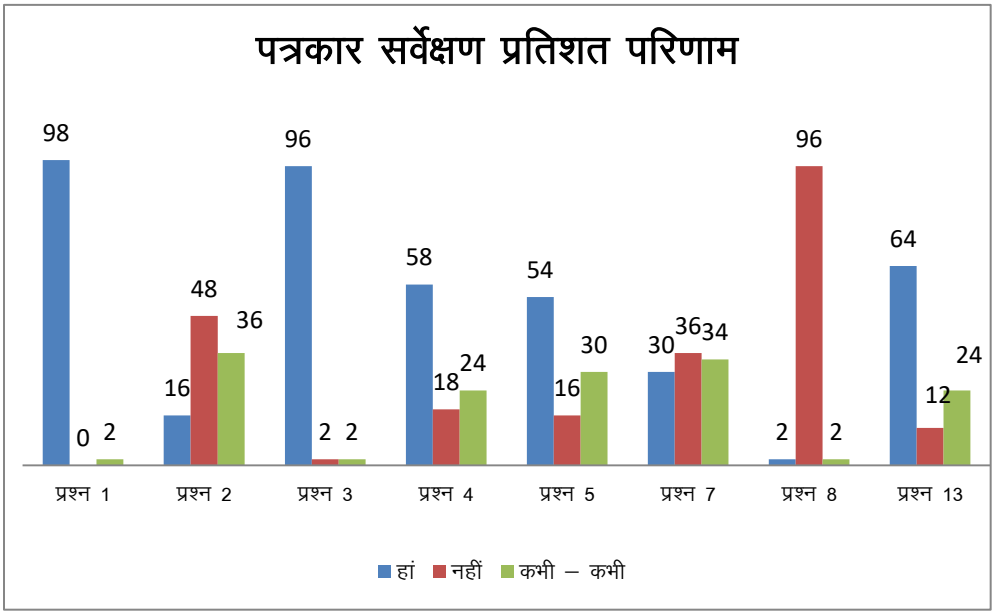

आरेख नं. 8 हिंदी दैनिकों के पत्रकारों द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों का प्रतिशत सर्वेक्षण परिणाम

इस सर्वेक्षण परिणाम में 50 पत्रकारों में 64 प्रतिशत पत्रकारों का कहना है कि बाजारीकरण के कारण सामाजिक समस्या सम्बंधित समाचारों की गुणवता पर गहरा असर पड़ता है।98 प्रतिशत ने यह बताया कि वह सामाजिक समस्या सम्बंधित समाचारों का संकलन करते हैं।48प्रतिशत पत्रकारों का मानना है कि उनके द्वारा भेजे गए सामाजिक समस्या सम्बंधि समाचार मुख्य संस्करण में नहीं छपते हैं।96 प्रतिशत पत्रकारों का कहना है कि उनके द्वारा भेजे गए सा.स.स.समाचार मुख्य संस्करण में न छाप कर स्थानीय संस्करण में छाप दिए जाते हैं।58 प्रतिशत पत्रकारों का यह कहना है कि उनके द्वारा भेजे गए सा.स. स. समाचारो का आकार मुख्य संस्करण में छोटा कर दिया जाता है ।58 प्रतिशत पत्रकारों का कहना है कि उनके द्वारा भेजे गए सा.स.स. समाचारों की संख्या कम कर दी जाती है, 36 प्रतिशत पत्रकार यह मानते हैं कि उनके द्वारा भेजे गए सा.स.स. समाचार में रंगीन छाया चित्र को मुख्य संस्करण में छापा नहीं जाता।64 प्रतिशत पत्रकार यह मानते हैं कि बाजांरीकरण के कारण सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

7.3 उप–संपादक साक्षात्कार

साक्षात्कार अनुसूचि 3 :– हमने उत्तर भारत के पांच समाचार पत्रों के 10 उप–संपादकों को इस सर्वेक्षण में शामिल किया है जिसमें पंजाब केसरी,दैनिक जागरण,दैनिक भास्कर,अमर उजाला तथा दैनिक ट्रिब्यून को लिया है। हिंदी समाचार पत्रों के उप–संपादकों से एकत्रित आंकड़ों के परिणाम इस प्रकार हैं।

तालिका नं. 9 हिंदी दैनिकों के उप–संपादकों द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों का कुल तथा प्रतिशत सर्वेक्षण परिणाम

प्रश्न	हा		नहीं		कभी– कभी	
	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
1	6	60	0	0	4	40
2	1	10	4	40	5	50
3	10	100	0	0	0	0
4	6	60	2	20	2	20
5	6	60	2	20	2	20
7	3	30	6	60	1	10
8	1	10	8	80	1	10
14	6	60	3	30	1	10

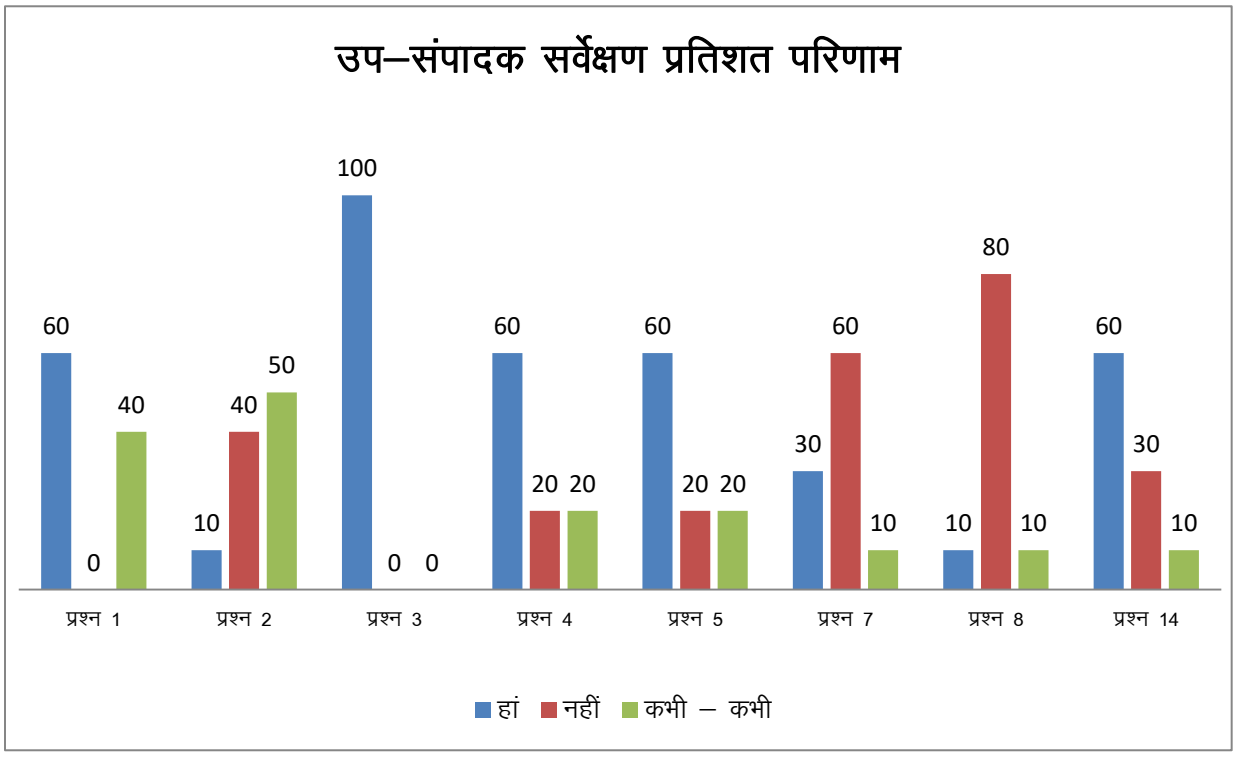

आरेख नं. 9 हिंदी दैनिकों के उप–संपादकों द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों का प्रतिशत सर्वेक्षण परिणाम

इस सर्वेक्षण परिणामों में 10 उप–संपादकों द्वारा दिए गए उत्तरों से जो आंकड़े जिसमें 60–60 प्रतिशत उप–संपादकों ने माना कि उनको इन समाचारों की संख्या और आकार कम करना पड़ता है,60 प्रतिशत उप–संमपादक यह मानते हैं कि इन समाचारेां को लीड स्टोरी में जगह नहीं दी जाती तो वहीं 60 प्रतिशत का कहना है कि इन समाचारों के रंगीन छाया चित्रों का प्रकाशन नहीं किया जाता, 60 प्रतिशत उप–संपादक यह मानते हैं कि बाजारीकरण के कारण सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

8.0 संपादक साक्षात्कार

साक्षात्कार अनुसूचि 4:–इस सर्वेक्षण में विभिन्न हिंदी समाचार पत्रों जिसमें पंजाब केसरी,दैनिक जागरण,दैनिक भास्कर,अमर उजाला तथा दैनिक ट्रिब्यून 5 संपादकों को शामिल किया है सामने आए आंकड़े इस प्रकार है

तालिका नं. 10 हिंदी दैनिकों के संपादकों द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों का कुल तथा प्रतिशत सर्वेक्षण परिणाम

प्रश्न	ळां		नहीं		कभी– कभी	
	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
1	5	100	0	0	0	0
2	1	20	0	0	4	80
3	5	100	0	0	0	0
4	3	60	0	0	2	40
5	2	40	2	40	1	20
7	2	40	0	0	3	60
8	0	0	5	100	0	0
14	3	60	1	20	1	20

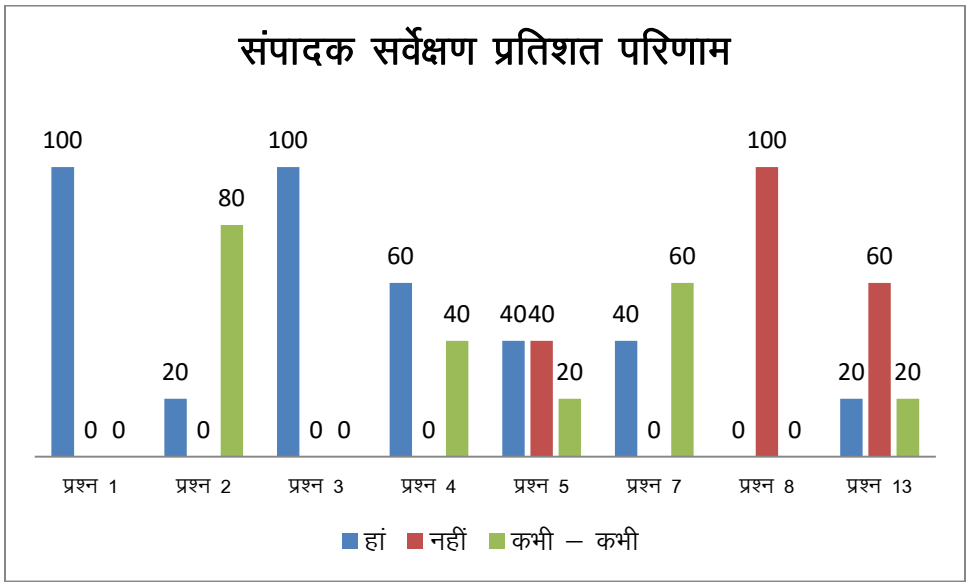

आरेख नं. 10 हिंदी दैनिकों के संपादकों द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों का प्रतिशत सर्वेक्षण परिणाम

हमने पांचों हिंदी समाचार पत्रों के संपादको के साक्षात्कार भी किए जिसमें उनके द्वारा दिए गए उत्तरों से जो आंकड़े प्राप्त हुए जिसमें 60 प्रतिशत संपादक मानते हैं कि इनकी संख्या कम करनी पड़ती है,40प्रतिशत का मानना है कि आकार छोटा किया जाता है ।अगर इन समाचारों को लीड स्टोरी में जगह देने की बात आती है तो 60प्रतिशत कहते हैं कि कभी–कभी इन समाचारों को जगह दी जाती है,60 प्रतिशत संपादक मानते हैं कि इन समाचारों की रंगीन छाया चित्र प्रकाशित नहीं किए जाते हैं,60 प्रतिशत संपादकों का यह मानना है कि बाजारीकरण का समाजिक समस्या सम्बंधी समाचारो की गुणवत्ता पर असर पड़ता है।

9.0 निष्कर्ष

इस अध्ययन में हिंदी दैनिकों के मुख्य संस्करण में प्रकाशित होने वाले समाचारों की अगर संख्या को देखें तो सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचार संख्या में चौथे स्थान पर तथा सबसे ज्यादा अन्य समाचार प्रकाशित किए गए दूसरे स्थान पर विज्ञापन प्रकाशित किए गए,पांचवें स्थान पर आर्थिक समाचारों को प्रकाशित किया गया।इस अध्ययन में हिंदी दैनिकों के मुख्य संस्करण में प्रकाशित होने वाले समाचारों के अगर आकार को देखें तो यहां सामाजिक समस्या सम्बंधित समाचार चौथे स्थान पर रहे यहां राजनीतिक समाचारों ने इन समाचारों को मात दे दी इसका मतलब यह है कि भले ही यह समाचार संख्या में ज्यादा थे मगर इनके आकार को कम कर दिया गया,सबसे ज्यादा क्षेत्रफल में अन्य समाचार, दूसरे स्थान पर विज्ञापन, प्रकाशित किए गए।इस अध्ययन से हमे यह जानने में सफलता मिली कि हिंदी समाचार पत्रों में सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों के रंगीन चित्रों का प्रकाशन बहुत कम किया गया सबसे ज्यादा अन्य समाचारों के चित्रों का प्रकाशन किया जाता है,देसरे स्थान पर राजनीतिक समाचार तथा तीसरे स्थान पर आर्थिक समाचारों के रंगीन चित्रों का प्रकाशन किया गया । किसी भी समाचार पत्र में श्याम श्वेत चित्रों का प्रकाशन अब नहीं किया जाता।लीड स्टोरी में भी सबसे ज्यादा अन्य समाचारों को जगह दी गई दूसरे स्थान पर राजनीतिक सामचार तो तीसरे स्थान पर आर्थिक समाचार रहे सामाजिक समस्या सम्बंधित समाचार लीड स्टोरी में जगह पाने में नाकाम रहे।टॅाप स्टोरी के रूप में देखें तो अन्य समाचारों सबसे ज्यादा टॅाप स्टोरी में जगह दी गई, राजनीतिक समाचार टॅाप स्टोरी में जगह बनाने में दूसरे स्थान पर रहे तीसरी स्थान पर आर्थिक समाचार टॅाप स्टोरी में जगह पाने में कामयाब रहे तो वहीं सामाजिक समस्या सम्बंधित समाचारों ने सबसे कम बार टॅाप स्टोरी में जगह बनाई।

प्रस्तुत शोध के परिणामों से हम कह सकते हैं कि बाजारीकरण के कारण हिंदी समाचार पत्रों के मुख्य संस्करण में सामाजिक समस्या सम्बंधित समाचारों की संख्या तथा उनका आकार प्रभावित होता है ।इस सर्वेक्षण से यह परिणाम निकलकर सामने आए कि हिंदी समाचार पत्रों के पत्रकारों द्वारा भेजे गए सामाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों को स्थानीय संस्करण में तो जैसे का तैसा छाप दिया जाता है मगर जब बात मुख्य संकरण की आती है तो उनमें कांट छांट कर दी जाती है और वह कांट छांट छोटी नहीं बहुत बड़ी होती है इन समाचारों को मुख्य संस्करण में नही के बराबर छापा जाता है अगर छापा भी जाता है तो उनका आकार बहुत छोटा होता है।पत्रकारों द्वारा भेजे गए सा.स.स.समाचार के रंगीन छाया चित्र को भी मुख्य संस्करण में जगह नहीं दी जाती।इस शोध में यह तथ्य ज्ञात हुआ कि बाजारीकरण के कारण समाजिक समस्या सम्बंधी समाचारों की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

10.0 संदर्भ ग्रंथ सूची

(1) *ड्रेवर, जेम्स. (1955). https://www.yaasyc.in/2021/01/Meaning-Of-Research.html*
(2) *डब्ल्यू. बेस्ट, जॉन. https://www.psychologyina.com/2023/05/research.html*
(3) *कोठारी, सी. आर. https://www.psychologyina.com/2023/05/research.html*
(4) *मर्टन, रोबर्ट,के. एंड निस्वेत. https://www.thestudyiq.com/2023/01/samajik-samasya.html*
(5) *अर्ल, रोब., एवं सेल्जनिक, जी.जे. https://www.thestudyiq.com/2023/01/samajik-samasya.html*
(6) *ग्रीन.* https://www.thestudyiq.com/2023/01/samajik-samasya.html
(7) लिंच,एस.(2002).एनालाइजिंग न्यूजपेपर कन्टैंट:इनक्लूडिंग नैशनल कम्पैरिजन डाटा फॉर यूएस डेली.
(8) मार्टिनस,एन.(2013).ए कन्टैंट एनालाइसिस ऑफ प्रिंट न्यूज कवरेज ऑफ मीडिया वाइलैंस एंड एगरैसन रिसर्च जर्नल ऑफ कॉमनिकेशन.